B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A)/Unit – 2(d)
Topic – एकीकृत या समेकित पाठ्यचर्या
(Integrated or Inclusive Curriculum)
Lecture No. - 76

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान के अनुसार मस्तिष्क एक इकाई है। यह ज्ञान को छोटे–छोटे टुकड़ों के बजाए उसे पूर्ण रूप में ग्रहण करता है। मस्तिष्क में वही वस्तु या विचार स्थायी होता है जो पूर्ण अर्थ देता है। एकीकृत या समेकित पाठ्यक्रम से तात्पर्य वैसे पाठ्यक्रम से है जिसके विषयों के बीच कोई अवरोध नहीं होता बल्कि एक–दूसरे से संबंधित होते है। अर्थात्त इस प्रकार के पाठ्यक्रम में ज्ञान को विषयों मे खण्डित न करके उसे एक इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

हेंडरसन (Henderson) के अनुसार,"वह पाठ्यक्रम जिसके विषयों के बीच कोई अवरोध नहीं होता, एकीकृत पाठ्यक्रम कहलाता है। इस प्रकार का पाठ्यक्रम उन अनुभवों को देता है, जिनको एकीकरण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के लिए सुविधाजनक समझा जाता है और जिनसे संबंधित रहकर बालक अपने अनुभव को समझने या उसक पुनः निर्माण करने में उपयुक्त पाठ्य–वस्तु को सीखते हैं। इस प्रकार का अनुभव–प्रधान पाठ्यक्रम, विषय को अलग–अलग रखने और उनकों शीर्षकों में बाँटने का अंत करता है तथा ऐसे विषयो को स्थान देता है जो बालक की रूचि के केन्द्र होते हैं।"

एकीकृत पाठ्यक्रम की विशेषताएँ
(Merits of Integrated Curriculum)

1. **मनोवैज्ञानिक (Psychological)** – एकीकृत पाठ्यक्रम में बालकों के रूचियों एवं अनुभवों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। अतः इस प्रकार के पाठ्यक्रम का आधार मनोवैज्ञानिक होता है।

2. **जीवन से संबंधित (Related to Life)**– ऐसे पाठ्यक्रम में अनेक ऐसे विषयों को सम्मिलित किया जाता है, जिनका बालकों के जीवन से घनिष्ठ संबंध होता है।

3. **ज्ञान की प्रस्तुती एक इकाई के रूप में (Presentation of Knowledge as a Single Unit)** – इस प्रकार के पाठ्यक्रम में ज्ञान तथा अनुभवों को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

4. **विभिन्न विषयों का सह–संबंध (Correlation of Varius Subjects)** – इसके सभी विषय एक–दूसरे से संबंधित होता है। इससे बालक नवीन ज्ञान को सरलतापूर्वक ग्रहण करते हैं।

5. **अनेकता में एकता (Unity in Deversity)** – इस प्रकार के पाठ्यक्रम में अनेकता में एकता के सिद्धांत को प्रमुख स्थान दिया जाता है। कहने का अर्थ है कि कई विषयों को एक साथ मिलाकर पढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए इतिहास, भूगोल एवं नागरिक–शास्त्र का अध्ययन–अध्यापन अलग–अलग न करके उन्हें एक साथ सामाजिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

6. **अधिगम की सरलता (Simplification of Learning Process)** – इस प्रकार का पाठ्यक्रम तार्किक दृष्टि से अनुकूल है। इससे विषयों की अधिगम प्रक्रिया सरल हो जाती है क्योंकि संबंधित विषयों की एक साथ अध्ययन–अध्यापन से वैसे प्रकरणों की पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता नहीं होती जिनका सभी विषयों से संबंध हो।

एकीकृत–पाठ्यक्रम की सीमाएँ
Limitations of Integrated Curriculum

1. **बलकों की रूचियों का ध्यान में रखते हुए एकीकरण असंभव (Impossiblity of Integration of Subject in Accorcance with Interests of Every Child)** – सभी बालके की रूचियाँ अलग–अलग होती हैं। इसलिए सभी की रूचियों का ध्यान करते हुए एकीकरण असंभव प्रतीत होता है। उदाहरण के लिए भूगोल, नागरिक–शास्त्र, इतिहास एवं अर्थशास्त्र को लें। यह बालक इनमें से किसी एक भी विषय में रूचि नहीं रखता हो तो इन विषयों के एकीकृत रूप सामाजिक विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन एक अरूचिकर कार्य होगा।

2. **सभी विषयों का एकीकरण असंभव (Impossiblity of Integration of All Subjects)** – सभी विषयों का एकीकरण करना भी एक गलत कदम होगा। उदाहरण के तौर पर गणित के विषय का हिन्दी या इतिहास के साथ एकीकरण करना एक बड़ी भूल होगी। बिना आवश्यकता के विषयों के एकीकरण करने से पाठ्यक्रम की स्वाभाविकता का ह्रास होता है।

3. **विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता (Need for Specially Trained Teachers)** – एकीकृत पाठ्यक्रम के विषयों के लिए दक्ष एवं विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। ऐसे शिक्षकों की हमारे देश में कमी है।

4. **अधिगम–अनुभवों को क्रमपूर्वक प्रस्तुत करने की आवश्यकता (Neeed for Sequential Presentation of Learning Experiences)** – एकीकृत पाठ्यक्रम में विभिन्न क्रिया–कोशलों एवं अधिगम–अनुभवों के सीखने के एक निश्चित क्रम आवश्यक है। इसके अभाव में अनुभवों की निरंतरता को समझने में कठिनाई होती है।

(समाप्त)